

पाठ 9 चतुराई और विनम्रता

पाठ विश्लेषण, शब्दार्थ



CLASS: IV
SUBJECT : (HINDI)
CHAPTER NUMBER: 9
TOPIC: चतुराई और विनम्रता
SUB TOPIC: पाठ विश्लेषण, शब्दार्थ

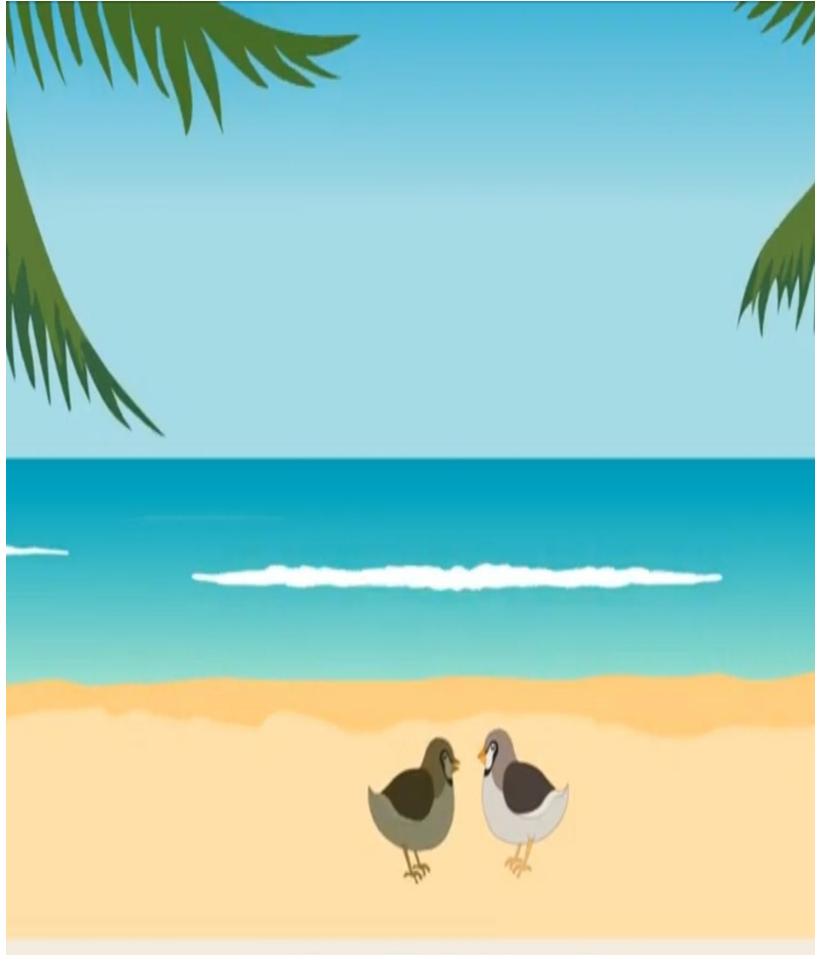
CHANGING YOUR TOMORROW

पाठ 9 चतुराई और विनम्रता



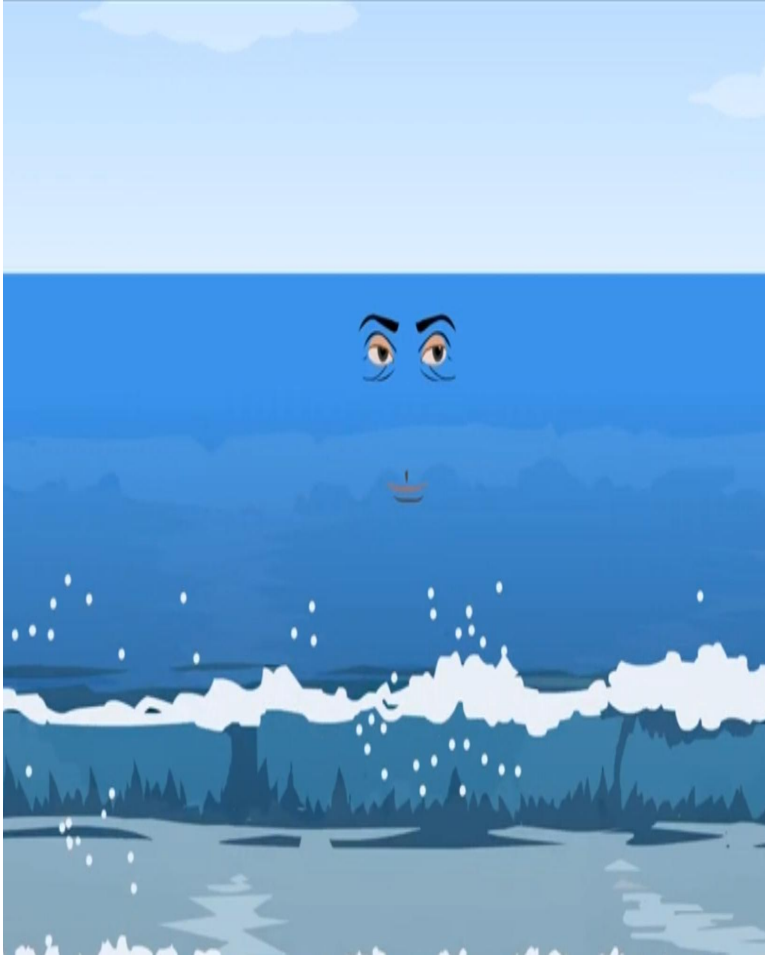
चितन-मनन

हर प्राणी को अहंकार का त्याग करना चाहिए।
अहंकार से ही शत्रु बन जाते हैं। मधुर वाणी से स्वयं
तथा दूसरों को भी प्रसन्नता मिलती है।



समुद्र के किनारे एक टिटहरी अपने पति के साथ रहती थी। जब उसके अंडे देने का समय आया तो उसने अपने पति से कहा, "आप कोई सुरक्षित स्थान खोजिए, जहाँ पर मैं अंडे दे सकूँ।" घमंडी पति ने कहा, "तुम यही समुद्र के किनारे अंडे दो समुद्र में हमारे अंडे वहाँ ले जाने की हिम्मत नहीं है।" यह बात समुद्र ने सुन ली। उसने सोचा, "इस छोटे से पक्षी की यह हिम्मत कि वह मुझे कुछ समझता ही नहीं।" उसने टिटहरी के पति को सबक सिखाने का फैसला किया।

जब टिटहरी ने अंडे दिए तो समुद्र अपने ज्वार के साथ उन्हें बहा ले गया। टिटहरी और उसके पति ने लौटने पर देखा कि उनके अंडे नहीं हैं। टिटहरी ने अपने पति से कहा, "देख लिया आपने, आपके घमंड के कारण हमारे अंडे पता नहीं कहाँ गायब हो गए? लगता है समुद्र उन्हें ले गया।" "मैं मूर्ख नहीं। तुम देखना मैं इस दुष्ट समुद्र से बदला लूँगा। अपनी चाँच से पानी पीकर इसे सुखा दूँगा।" पति ने घमंड से कहा।

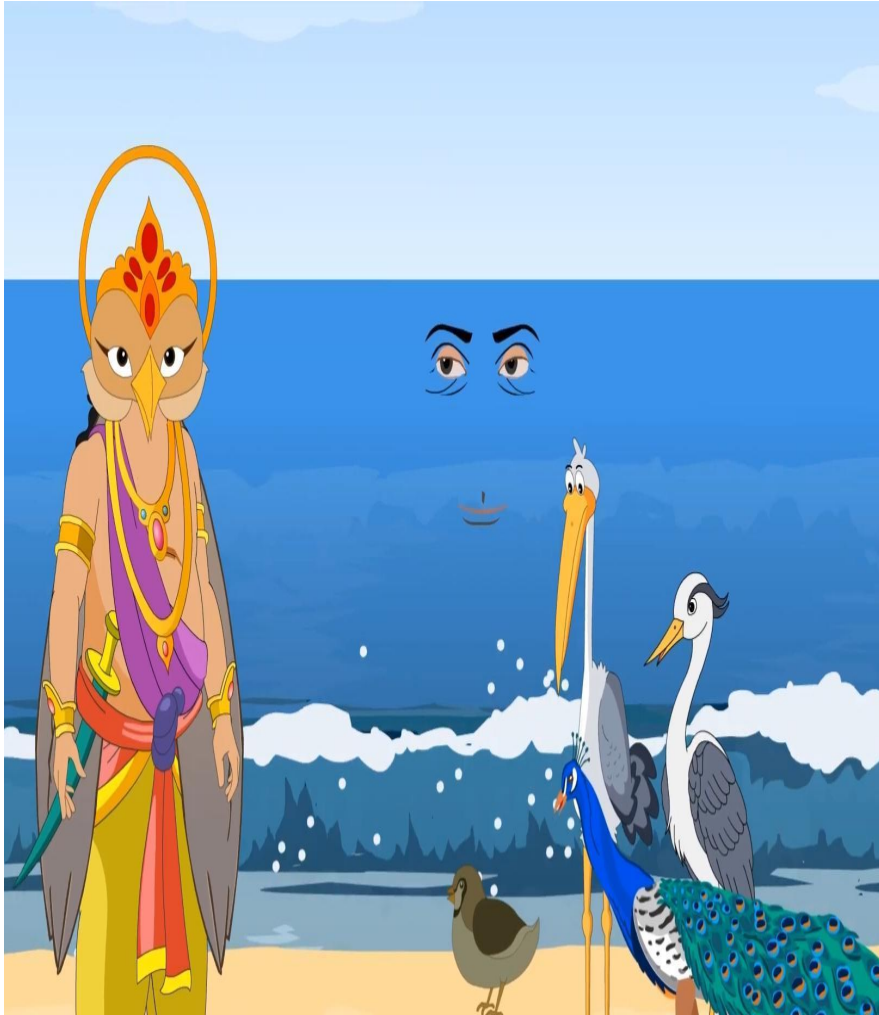




टिटहरी ने समझदारी से अपने पति को कहा, "आप अकेले ही इस समुद्र से बदला मत लो। छोटी-सी चाँच से इतना बड़ा विशाल समुद्र सुखाया नहीं जा सकता। अगर बदला लेना हो है तो अपने दूसरे पक्षियों को भी साथ में ले लो। सच ही कहा है कि तिनको को मिलाकर ही रस्सी बनती है, जिससे हाथी भी बाँधे जा सकते हैं।" टिटहरी की बात को सही समझते हुए पति ने बगुले, सारस, मोर आदि पक्षियों को संबोधित करते हुए कहा, "" मित्रो इस दुष्ट समुद्र ने मेरे अंडे चुरा लिए हैं इसलिए मैं इसे सबक सिखाना चाहता हूँ। इसे सुखाने को कोई उपाय बताइए।"



सभी पक्षियों ने आपस में चर्चा की मोर ने कहा, "हम पक्षियों में समुद्र का पानी सुखाने की शक्ति नहीं है। हमें अपने राजा गरुड़ के पास जाकर उनसे मदद माँगनी चाहिए।" सभी पक्षी अपने राजा गरुड़ के पास पहुंचे। मोर ने कहा, "महाराज, इस दुष्ट समुद्र ने आपके होते हुए भी टिटहरी के अंडे चुरा लिए हैं। इस प्रकार तो पक्षी कुल बिलकुल समाप्त हो जाएगा।"



बात सुनकर गरुड़ ने उत्तर दिया,
"आप लोग ठीक कह रहे हैं। मैं अभी
जाकर समुद्र से बात करता हूँ।" गरुड़
अपने साथ कुछ पक्षियों को लेकर
समुद्र के पास गए। उसने चतुराई से
समुद्र की विशालता की प्रशंसा की ,
फिर टिटहरी की ओर से माफ़ी माँगी
।समुद्र गरुड़ की नम्रता से प्रभावित
हुआ। उसने टिटहरी के अंडे वापस
कर दिए। टिटहरी खुशी-खुशी अपने
अंडे लेकर चली गई।

शब्दार्थ

टिटहरी - पानी के किनारे रहने वाली चिड़िया
सुरक्षित – सुरक्षा की गई
हिम्मत - साहस
सबक - सीख
ज्वार - प्रवाह
घमंड – अहंकार
दुष्ट – परेशान करने वाले
विशाल – बहुत बड़ा
तिनका- सुखी घास आदि का टुकड़ा
चतुराई- चतुर होने की अवस्था
नम्रता - नम्र होने का भाव

गृहकार्य

कठिन शब्द और उनके अर्थ को 3 बार
लिखें।

शिक्षण प्रतिफल

बच्चे सही उच्चारण, विषय वस्तु और शब्दार्थ की जानकारी लिये।

THANKING YOU
ODM EDUCATIONAL GROUP